Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

शहीद करतार सिंह सराभा: गदर आंदोलन के महानायक और भगत सिंह के वैचारिक गुरु

डॉ. अमित कुमार ताम्रकार*

* **सहायक प्राध्यापक (इतिहास)** PMCoE **स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.) भारत**

शोध सारांश – यह शोध पत्र बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशक में भारत और विदेशों (विशेषकर उत्तरी अमेरिका) में पनपे क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के संदर्भ में शहीद करतार सिंह सराभा के जीवन और उनके युगांतरकारी योगदान का मूल्यांकन करता है।बीसवीं सदी के आरंभिक दशक में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम ने एक नई करवट ली, जहाँ सशस्त्र क्रांति के माध्यम से ब्रिटिश हुकूमत को उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया गया। इस क्रांतिकारी चेतना को वैश्विक धरातल पर संगठित करने का श्रेय ग्गदर आंदोलनग् को जाता है। इस आंदोलन के सबसे जाज्वल्यमान नक्षत्र करतार सिंह सराभा थे। सराभा ने न केवल 'गदर' पत्रिका के माध्यम से औपनिवेशिक सत्ता के क्रूर स्वरूप को उजागर किया, बल्कि प्रथम विश्व युद्ध की परिस्थितियों का लाभ उठाकर भारत में एक व्यापक सैन्य विद्रोह (1915 ई.) की रूपरेखा तैयार की। इस पत्र में उनके प्रारंभिक जीवन, वैचारिक रूपांतरण, संगठनात्मक कौशल, लाहौर षड्यंत्र केस और उनकी शहादत के दूरगामी राजनैतिक व सामाजिक प्रभावों जैसे भगत सिंह की क्रांतिकारी चेतना के निर्माण का ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है। 24 मई 1896 को लुधियाना के सराभा गाँव में जन्मे इस युवा ने मात्र 19 वर्ष की आयु में 16 नवंबर 1915 को लाहौर सेंट्रल जेल में हंसते-हंसते फांसी के फंदे को चूम लिया। खुदीराम बोस के बाद वे भारत के सबसे कम उम्र के शहीदों में से एक हैं। उनका जीवन-वृत्त लघु अवश्य था, परंतु उसका ऐतिहासिक प्रभाव अत्यंत व्यापक और दूरगामी रहा।

शब्द कुंजी –करतार सिंह सराभा, गदर आंदोलन, गदर पत्रिका, क्रांतिकारी राष्ट्रवाद, लाहौर षड्यंत्र केस, निर्भीक राष्ट्रवाद।

प्रस्तावना – मात्र 19 वर्ष की आयु में, जब युवा अपने करियर के बारे में सोचते हैं, सराभा ने एक अंतरराष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया और हंसते-हंसते फांसी के फंदे को चूम लिया।करतार सिंह सराभा और उनके साथी लाला हरदयाल ने गदर आंदोलन को पूरी तरह धार्मिक संकीर्णता से मुक्त रखा था। सराभा का मानना था कि देशभक्ति का कोई एक धर्म नहीं होताय उनका धर्म केवल 'आजादी' था।सराभा उन शुरुआती युवा नेताओं में से थे जिन्होंने यह समझा कि भारत की आजादी की लड़ाई को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लड़ना होगा। उन्होंने अमेरिका और कनाडा में रह रहे प्रवासी भारतीयों को जिस तरह संगठित किया, वह उनके उच्च बौद्धिक स्तर को दर्शाता है।करतार सिंह सराभा की सबसे बड़ी ताकत ब्रिटिश भारतीय सेना के भीतर पैठ बनाना था। सराभा ने केवल आम जनता को नहीं, बल्कि पंजाब और उत्तर भारत की सैन्य छावनियों में जाकर भारतीय सिपाहियों को यह अहसास कराया कि वे औपनिवेशिक सत्ता के औजार बने हुए हैं।

सराभा ने पंजाब के ग्रामीण अंचलों (किसानों) और छावनियों (सैनिकों) के बीच एक मजबूत कड़ी का काम किया। वे स्वयं एक किसान परिवार से थे, इसलिए पंजाब के देहाती इलाकों में उनकी स्वीकार्यता बहुत अधिक थी।सराभा ने जिस तरह 'गदर' पत्रिका के माध्यम से वैचारिक साहित्य को सुदूर गांवों तक पहुँचाया, उसने पंजाब में अंग्रेजी शासन के प्रति जो वैचारिक विरोध पैदा किया, वह गदर आंदोलन के भौतिक रूप से असफल होने के बाद भी कई दशकों तक जीवित रहा।

'प्रथम लाहौर षड्यंत्र केस (1915)' भारत के क्रांतिकारी इतिहास में एक टर्निंग पॉइंट के रूप में स्थापित हुआ। इस मुकदमे में करतार सिंह सराभा मुख्य धुरी थे।सराभा द्वारा अदालत में जज के सामने बिना किसी भय के दोष स्वीकार करना और अपनी सजा को कम करने के किसी भी प्रयास को ठुकरा देना, आने वाली क्रांतिकारी पीढ़ी (विशेषकर भगत सिंह की पीढ़ी) के लिए एक नैतिक आदर्श बन गया। इसने क्रांतिकारियों को जनता की नजरों में 'सहानुभूति का पात्र' नहीं, बल्कि 'नायक' बना दिया। करतार सिंह सराभा एक ऐसे 'प्रेरणापुंज' के रूप में प्रकट हुए जिन्होंने भारतीय युवाओं में राष्ट्रीयता की भावना को चरम पर पहुँचाया।

सरदार भगत सिंह के राजनीतिक और नैतिक गुरु करतार सिंह सराभा थे, और सराभा की शहादत ने ही भारत में 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA)' की स्थापना की वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार की थी।आधुनिक इतिहासकार करतार सिंह सराभा को केवल एक 'रोमांचकारी या उग्र विद्रोही' नहीं मानते। वे उन्हें एक दूरदर्शी रणनीतिकार, प्रखर संपादक और असाधारण धर्मनिरपेक्ष नेता के रूप में देखते हैं, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को अंतरराष्ट्रीय आयाम दिया और राष्ट्रवाद को एक नई, समझौताहीन परिभाषा प्रदान की।

प्रारंभिक जीवन, शिक्षा और वैचारिक रूपांतरण– करतार सिंह सराभा का जन्म लुधियाना के सराभा गांव में एक संभ्रांत और उच्च जमींदार जाट परिवार में 'सदन सिंह ग्रेवाल' के वंशज और माता साहिब कौर व पिता मंगल सिंह के घर हुआ था। उनके जन्म के कुछ समय बाद ही पिता मंगल सिंह का असमय देहांत हो गया, जिसके कारण उनका पालन-पोषण उनके

दादा बदन सिंहऔर उनके चाचाओं की देखरेख में हुआ।करतार सिंह सराभा बचपन से ही अत्यधिक महत्वाकांक्षी थे और कम समय में अधिक काम करना चाहते थे। उन्होंने मालवा खालसा हाई स्कूल (लुधियाना) से 7वीं कक्षा पास करने के बाद प्रमाण पत्र में हेरफेर कर उसे 9वीं कक्षा का बना लिया और आर्य स्कूल में दाखिला ले लिया। पकड़े जाने पर उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया।इसके बाद उनके दादा ने उन्हें उड़ीसा में उनके पुलिस अधिकारी चाचा बख्शीश सिंह के पास भेज दिया, जहाँ उन्होंने रेवनशॉ कॉलेज में दाखिला लिया। उड़ीसा (तत्कालीन बंगाल प्रांत) के राजनीतिक और राष्ट्रवादी माहौल तथा आधुनिक अंग्रेजी पुस्तकों के अध्ययन ने उनमें देशप्रेम की भावना जगाई।कटक में शिक्षा ग्रहण करने के दौरान युवा करतार सिंह पर बंगाल के तत्कालीन उग्र राष्ट्रवादी और क्रांतिकारी विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। उस समय बंगाल अनुशीलन समिति और युगांतर जैसी संस्थाओं के माध्यम से क्रांतिकारी गतिविधियों का मुख्य गढ़ बन चुका था। परंतु ब्रिटिश सरकार बंगाल में किसी भी प्रकार की औपनिवेशिक विरोधी गतिविधि में संलिप्त व्यक्तियों पर अत्यंत क्रूर और कठोर कानूनी कार्यवाही कर रही थी। इस दमनकारी माहौल को देखते हुए करतार सिंह ने भारत छोड़कर अमेरिका जाने की योजना बनाई और एक छात्र के रूप में वर्ष 1911 में उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका रवाना हुए और 1 फरवरी 1913 को वहाँ पहुंचे। आव्रजन अधिकारी द्वारा रोके जाने पर उन्होंने अत्यंत तर्कपूर्ण उत्तर दिया कि यदि उन्हें पढ़ने से रोका गया, तो यह मानवता और दुनिया की तरक्की का नुकसान होगा। इस किशोर उम्र के तर्क से प्रभावित होकर अधिकारी ने उन्हें प्रवेश की अनुमति दी।

अमेरिका-प्रवास और वैचारिक चेतना का उदय- करतार सिंह सराभा ने अमेरिका के प्रतिष्ठित कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कलेमें रसायन विज्ञान के छात्र के रूप में प्रवेश लिया। यद्यपि वे पढ़ाई के उद्देश्य से वहां गए थे, परंतु बंगाल में रोपे गए राष्ट्र प्रेम के बीज उनकी चेतना में जीवित थे।उन दिनों अमेरिका और कनाडा में भारतीय प्रवासियों (विशेषकर श्रमिक वर्ग) को भयंकर नस्लीय भेदभाव, सामाजिक बहिष्कार और कानूनी कड़ेपन का सामना करना पड़ता था। अमेरिकी गोरे प्रवासियों को हेय दृष्टि से देखते थे और उन्हें दोयम दर्जे का नागरिक माना जाता था। बर्कले विश्वविद्यालय में पढ़ते हुए सराभा ने महसूस किया कि इस अपमान और भेदभाव का मूल कारण भारतीयों की व्यक्तिगत अक्षमता नहीं, बल्कि उनका 'एक गुलाम देश का नागरिक होना' है। इस अहसास ने उनके भीतर औपनिवेशिक शासन के प्रति आक्रोश को तीव्र कर दिया।अमेरिकी स्वतंत्रता दिवस पर लोगों का उत्साह देखकर उनके मन में भी भारत को स्वतंत्र कराने और अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह करने की तीव्र इच्छा जागृत हुई।

गदर पार्टी में भूमिका और संगठन कुशलता- उत्तरी अमेरिका में बसे भारतीय प्रवासियों ने समझ लिया था कि जब तक भारत स्वतंत्र नहीं होगा, तब तक विश्व में उन्हें कहीं भी सम्मान नहीं मिल सकता। इस चेतना के फलस्वरूप प्रवासी भारतीयों ने स्वयं को संगठित करना आरंभ किया। वे अपनी सभाओं में ब्रिटिश साम्राज्यवाद द्वारा भारतीय जनता के आर्थिक शोषण और सरकार के स्वेच्छाचारी स्वरूप को उजागर करने लगे।

इस वैचारिक पृष्ठभूमि में सन 1913 ई. में अमेरिका में 'हिन्दुस्तान गदर पार्टी' (शुरुआत में पैसिफिक कोस्ट हिंदुस्तान एसोसिएशन) की स्थापना हुई। इस आंदोलन को प्रारंभ से ही अत्यंत सुयोग्य और उच्च शिक्षित प्रवासियों का नेतृत्व प्राप्त हुआ, जिनमें प्रमुख थेरूलाला हरदयाल (मुख्य विचारक और मार्गदर्शक)बाबा सोहन सिंह भाकना (अध्यक्ष)पंडित काशीराम इत्यादि।बर्कले विश्वविद्यालय के पंजाबी छात्रावास में रहते हुए करतार सिंह सराभा लाला हरदयाल, भाई परमानंद और ज्वाला सिंह ठट्टीआ, बाबा सोहन सिंह भाकना जैसे क्रांतिकारियों के संपर्क में आए।लाला हरदयाल सेहुई उनकी भेंटशीघ्र ही एक गहरी वैचारिक और व्यक्तिगत निकटता में बदल गई।अप्रैल 1913 में आस्टोरिया (ओरगन) में लाला हरदयाल द्वारा बुलाई गई सभा में, जब गदर पार्टी के लिए स्वयंसेवकों का आह्वान किया गया, तब करतार सिंह सराभा भर्ती होने वाले सबसे पहले स्वयंसेवक बने। इसी सभा में उन्होंने संकल्प लिया कि वे स्वयं को प्रशंसा का पात्र तभी मानेंगे जब देश को आजाद करा लेंगे।अपनी असाधारण बुद्धिमत्ता, सांगठनिक क्षमता और निष्ठा के बल पर वे शीघ्र ही गदर पार्टी के मुख्य स्तंभ बन गए।

गदर आंदोलन: करतार सिंह सराभा उस ऐतिहासिक संगठन (हिंदी एसोसिएशन ऑफ द पैसिफिक कोस्ट/गदर पार्टी) के सक्रिय अंग बने, जिसका मुख्य उद्देश्य सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से भारत को ब्रिटिश दासता से मुक्त कराना और समानता, न्याय व धर्मनिरपेक्षता पर आधारित एक राष्ट्रीय सरकार का गठन करना था।उन्होंने सनफ्रांसिस्को के 'युगान्तर आश्रम' से निकलने वाली 'गदर पत्रिका' की पृष्ठभूमि तैयार करने और पार्टी के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।'गदर' अखबार के सम्पादन में करतार सिंह सराभा की प्रमुख भूमिका थी।1 नवंबर 1913 ई0 को उर्दू में प्रकाशित हुए गदर पार्टी के मुखपत्र 'गदर' (जो अंग्रेजी, उर्दू, हिंदी और पंजाबी में प्रकाशित होता था) के संपादन और मुद्रण का कार्य अपने हाथों में लिया। वे रात-रात भर हाथ से मशीन चलाकर इसे छापते थे।'गदर' पत्रपार्टी का आधार था जिसके सिरे पर 'अंग्रेजी राज का दुश्मन' शब्द लिखे होते थे। पत्र 'गदर' ने एक विज्ञापन छापा: 'भारत में विद्रोह फैलाने के लिए बहादुर सिपाहियों की आवश्यकता है। तनख्वाह- मौत (इनाम- शहादत: पेंशन- आजादी) लड़ाई का मैदान भारत है।' इस पत्रिका ने वैश्विक स्तर पर रह रहे भारतीयों और ब्रिटिश सेना में कार्यरत भारतीय सैनिकों में राष्ट्रवाद की ज्वाला धधकाई। वे इस पत्रिका के प्रकाशन में लगातार सहयोग करते रहे।सैन फ्रांसिस्को के 'युगांतर आश्रम' में जो झंडा फहराया गया था, उसका डिजाइन करतार सिंह सराभा ने ही तैयार किया था। यह झंडा स्वतंत्रता, बंधुत्व और समानता का प्रतीक था।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध वैश्विक जनमत तैयार करने और सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से गदर पार्टी ने सैन फ्रांसिस्को के अतिरिक्त जर्मनी, जापान और अफगानिस्तान में भी अपने कार्यालय स्थापित किए। गदर पार्टी का मानना था कि केवल भाषणों या लेखों से स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की जा सकती इसके लिए सशस्त्र क्रांति अपरिहार्य है। पार्टी ने अपने युवा छात्र सदस्यों को सैन्य प्रशिक्षण देने का निर्णय लिया। करतार सिंह सराभा ने इस दिशा में विशेष रुचि दिखाई और न्यूयॉर्क जाकर हवाई जहाज और पैराशूट बनाने तथा उन्हें संचालित करने का तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त किया, ताकि भविष्य में युद्ध के दौरान इसका रणनीतिक उपयोग किया जा सके।जो उनके दूरदर्शी सैन्य दृष्टिकोण को दर्शाती है।

प्रथम विश्व युद्ध, भारत वापसी (1914 ई.)और 21 फरवरी 1915 की सैन्य क्रांति की योजना- अगस्त 1914 ई. में यूरोप में प्रथम विश्व युद्ध की रणभेरी बज उठी, जब इंग्लैंड ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। यह युद्ध शीघ्र ही एशिया और अफ्रीका के औपनिवेशिक क्षेत्रों तक

फैल गया।गदर पार्टी के नीति-निर्धारकों ने इस वैश्विक संकट को भारत की स्वतंत्रता के लिए एक 'स्वर्णिम अवसर' के रूप में देखा।'कामागाटा मारू' जहाज के घटनाक्रम और अन्य माध्यमों से हजारों प्रवासी भारतीय देश को आजाद कराने के संकल्प के साथ भारत लौटना चाहते थे। इसके पीछे मुख्य रणनीतिक कारण यह था कि युद्ध के कारण भारत में तैनात ब्रिटिश सेना के बहुसंख्यक ब्रिटिश और भारतीय सैनिकों को मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़ने के लिए यूरोपीय और मध्य-पूर्वी मोर्चों पर भेज दिया गया था। भारत के भीतर सैन्य उपस्थिति न्यूनतम थी।गदर पार्टी ने नारा दिया: 'ब्रिटेन की विपत्ति, भारत का अवसर है।' पार्टी के आह्वान पर अमेरिका और कनाडा से सैकड़ों गदर क्रांतिकारी छोटे-छोटे जत्थों में भारत की ओर रवाना होने लगे। करतार सिंह सराभा भी अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के तीव्र संकल्प के साथ गदर पार्टी के 'अग्रगामी जत्थे' में शामिल हुए और कोलंबो (श्रीलंका) के रास्ते होते हुए भारत पहुंचे।

योजना की रूपरेखा- भारत आकर करतार सिंह सराभा ने रासबिहारी बोस, शचींद्रनाथ सान्याल, पंडित परमानंद और विष्णु गणेश पिंगले के साथ मिलकर कपूरथला के एक मंदिर में ऐतिहासिक सैन्य विद्रोह की रूपरेखा तैयार की।यह योजना ठीक 1857 की क्रांति की तर्ज पर बनाई गई थी। धन के आभाव के कारण राजनैतिक डकेतियों की स्वीकृति दी गई।सराभा केवल योजनाकार नहीं थे, बल्कि वे स्वयं अग्रिम पंक्ति में रहकर साहनेवाल और मन्सूराजैसी साहसिक डकैतियों में शामिल हुए।

सराभा ने अपनी जान जोखिम में डालकर उत्तर भारत की विभिन्न ब्रिटिश-भारतीय सैन्य छावनियों का दौरा किया। उन्होंने वहां तैनात भारतीय सैनिकों से संपर्क कर उन्हें याद दिलाया कि वे अपनी ही मातृभूमि को गुलाम बनाए रखने के लिए अंग्रेजों के औजार न बनें। मेरठ, लाहौर, फिरोजपुर और अंबाला छावनियों के अनेक भारतीय सैनिक और अधिकारी इस विद्रोह में शामिल होने के लिए तैयार हो गए।

रासबिहारी बोस और करतार सिंह सराभा ने गहन विचार-विमर्श के बाद 21 फरवरी 1915 ई. को पूरे उत्तर भारत में एक साथ ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध सैन्य विद्रोह (गदर) की तिथि निश्चित की। योजना के अनुसार, भारतीय सैनिक छावनियों में ब्रिटिश अधिकारियों को बंदी बनाकर शस्त्रागारों पर कब्जा करने वाले थे।लगभग 26000 भारतीय सैनिक इस तख्तापलट की योजना में क्रांतिकारियों का साथ देने को तैयार हो चुके थे।

इतने बड़े पैमाने पर बनाई गई गुप्त योजना की असफलता का कारण एक बार फिर आंतरिक विश्वासघात बना। गदर पार्टी में पुलिस का एक जासूस कृपाल सिंह शामिल हो चुका था, जो अंदरूनी बैठकों की सारी जानकारी सीक्रेट सर्विस को दे रहा था।जब क्रांतिकारियों को आभास हुआ कि कृपाल सिंह ने 21 फरवरी की योजना पुलिस तक पहुंचा दी है, तो उन्होंने त्वरित निर्णय लेते हुए विद्रोह की तिथि दो दिन पूर्व अर्थात 19 फरवरी 1915 ई. निश्चित कर दी। दुर्भाग्यवश, मुस्तैद कृपाल सिंह ने इस बदले हुए समय की सूचना भी तुरंत औपनिवेशिक अधिकारियों को दे दी।

विद्रोह का दमन- 19 फरवरी 1915 के पहले ही औपनिवेशिक कुशासन ने सभी संदिग्ध भारतीय रेजिमेंट्स और बागी सैनिकों को छावनियों से निष्कासित कर दिया और उनके हथियारों को जब्त कर लिया। इस प्रकार, भारतीय इतिहास का यह अत्यंत सुनियोजित और व्यापक सैन्य विद्रोह शुरू होने से पहले ही कुचल दिया गया। इसके तुरंत बाद पूरे पंजाब और संयुक्त प्रांत (यूनाइटेड प्रोविंस) में गदर क्रांतिकारियों और उनके समर्थकों की बड़े पैमाने पर धरपकड़ शुरू हो गई।रासबिहारी बोस बनारस और कलकत्ता होते हुए 'ठाकुर सिंह' के छद्म नाम से पीकिंग (चीन) और अंतत: जापान सुरक्षित पहुंच गए। (कालांतर में उन्होंने जापान में रहकर ही द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 'आजाद हिंद फौज' के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई)।करतार सिंह सराभा भी अपने दो साथियों के साथ उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत से होते हुए अफगानिस्तान की सीमा तक पहुंच गए थे। वे चाहते तो सुरक्षित देश से बाहर जा सकते थे। परंतु सीमा पर पहुंचकर सराभा की अंतर्रात्मा कचोट उठी। उन्होंने अपने साथियों से कहा कि इस तरह पीठ दिखाकर भागने से बेहतर है कि एक बार फिर पंजाब लौटकर विद्रोह का प्रयास किया जाए।वे वापस पंजाब की ओर लौटे और सरगोधा (अब पाकिस्तान में) में 'जगत सिंह' नामक व्यक्ति के माध्यम से कुछ सैनिकों 2 से मिलने पहुंचे। परंतु तब तक परिस्थितियां पूरी तरह बदल चुकी थीं और चारों ओर मुखबिरों का जाल था। सरगोधा में ब्रिटिश भक्त सैनिकों ने ही उन्हें पहचान लिया और उन्हें पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया।

न्यायिक ढोंग और निर्भीक राष्ट्रवाद- लाहौर सैन्य षड्यंत्र केस के तहत सराभा और उनके साथियों पर ब्रिटिश हुकूमत का तख्ता पलटने का मुकदमा चलाया गया। अदालत के भीतर सराभा का आचरण एक अभियुक्त का नहीं, बल्कि एक विजेता का था।जब सराभा ने अदालत में पूरी योजना का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेते हुए देश की स्वतंत्रता के लिए हथियार उठाने की बात कबूली, तो अंग्रेज मैजिस्ट्रेट/जज उनकी कम उम्र और आकर्षण से प्रभावित होकर अचंभित रह गया। जज ने उन्हें अपना बयान बदलने और माफी मांगने का अवसर दिया ताकि उनकी सजा कम की जा सके। परंतु सराभा ने दो टूक शब्दों में इनकार कर दिया और मदनलाल ढींगरा के ऐतिहासिक वक्तव्य को दोहराते हुए ब्रिटिश राज को हिंसा पर आधारित बताया।अंतत: जज को अपने फैसले में लिखना पड़ा कि 'यह 61 अभियुक्तों में सबसे महत्वपूर्ण और खतरनाक व्यक्ति है।' जब उन्हें मौत की सजा सुनाई गई, तो उन्होंने अदालत को हंसते हुए 'धन्यवाद' (जींदो) कहा।

मृत्यु पर विजय- करतार सिंह सराभा के दादाजी उनसे लाहौर जेल में मिलने आए। उन्होंने कहा, 'करतार, हमें तो यह भी यकीन नहीं है कि तुम्हारी मृत्यु से देश को कोई लाभ होगा। तुम अपना जीवन क्यों बर्बाद कर रहे हो?' जवाब में, करतार सिंह ने अपने दादाजी को उन रिश्तेदारों की याद दिलाई जो हैजा, प्लेग या अन्य बीमारियों से मर गए थे। 'तो क्या आप चाहते हैं कि आपका पोता किसी बीमारी से मरे? क्या यह मृत्यु उससे हजार गुना बेहतर नहीं है?'उन्होंने सवाल किया, जिससे दादाजी अवाक रह गए।

16 नवंबर 1915 को फांसी के तख्ते पर चढ़ने से ठीक पहले उनका वजन 10 पौंड बढ़ गया था, जो इस बात का अकाट्य प्रमाण है कि देश के लिए प्राणोत्सर्ग करने का उनका आनंद मृत्यु के भय से कहीं बड़ा था। उनके अंतिम शब्द थे: 'मैं फांसी को बेहतर मानता हूँ, ताकि पुन: जन्म लेकर फिर फांसी पर लटकाया जाऊँ और यह क्रम तब तक चलता रहे, जब तक भारत स्वतंत्र न हो जाए।' जब लाहौर सेंट्रल जेल में करतार सिंह सराभा को फांसी के फंदे की ओर ले जाया जा रहा था, तब उनके साथी जेल की कोठरियों से आदरपूर्वक ओजस्वी गीत गा रहे थे:

'फख है भारत को एक करतार जू जाता है आज।
जगत और पिंगले को भी तू साथ ले जाता है आज।।'

करतार सिंह सराभा का चरित्र: मानवीय एवं नैतिक मूल्य- एक क्रांतिकारी के रूप में सराभा जितने आक्रामक थे, एक मानव के रूप में उतने

ही उच्च चरित्र के धनी और संवेदनशील थे।क्रांति के लिए धन जुटाने (डकैती) के दौरान जब उनके एक साथी ने एक महिला के साथ दुर्व्यवहार किया, तो सराभा ने तुरंत अपनी पिस्तौल साथी पर तान दी और उसे महिला के पैर छूकर माफी मांगने पर विवश किया। जब उस घर की वृद्ध माता ने उनसे इस मार्ग को चुनने का कारण पूछा, तो सराभा की आँखों में आंसू आ गए और उन्होंने कहा, 'माँ, यह मैं अपने लिए नहीं, देश की आजादी के लिए कर रहा हूँ।' यह घटना उनके चरित्र की पवित्रता और क्रांतिकारी शुचिता को रेखांकित करती है।

वैचारिक विरासत और भगत सिंह पर प्रभाव– करतार सिंह सराभा केवल एक सैनिक नहीं थे, बल्कि एक 'समाजवादी क्रांतिकारी' थे। उनका सबसे गहरा और अमिट प्रभाव अमर शहीद सरदार भगत सिंह पर पड़ा।जितेंद्रनाथ सान्याल की पुस्तक 'अमर शहीद' के अनुसार, भगत सिंह सराभा को अपना सर्वोच्च आदर्श और गुरु मानते थे। वे हमेशा अपनी जेब में करतार सिंह सराभा की एक तस्वीर रखते थे।भगत सिंह हर साल 16 नवंबर को लाहौर के ब्रेडला हॉल में सराभा का शहीदी दिवस बड़े पैमाने पर मनाते थे, जहाँ दुर्गा भाभी ने अपनी उंगली काटकर सराभा के चित्र पर रक्त का तिलक लगाया था।भगत सिंह ने अपने लेख 'बागी करतारसिंह' में सराभा को 'रणचंडी का परम भक्त' और 'विप्लव यज्ञ का पुरोहित' कहा है। वास्तव में, गदर आंदोलन का यही वैचारिक और रणनीतिक विकास आगे चलकर 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' के रूप में फला–फूला।

निष्कर्ष – करतार सिंह सराभा का जीवनवृत्त मात्र 19 वर्षों का एक संक्षिप्त कालखंड है, परंतु इसकी भव्यता और ऐतिहासिक महत्ता सदियों पर भारी है। वे एक संवेदनशील कवि भी थे, जिनकी कविता की पंक्तियाँ आज भी गूंजती हैं:

'जो कोई पढ़े कि कौन हो तुम, तो कह दो बागी ये नाम अपना।
जुल्म मिटाना हमारा पेशा, गदर का करना ये काम अपना।।'

सराभा केवल राष्ट्रवादी नहीं थे, वे मूलत: एक 'समाजवादी' भी थे, जो वर्गहीन और शोषणमुक्त समाज की कल्पना करते थे।करतार सिंह सराभा का जीवन–वृत्त आधुनिक भारतीय इतिहास के उन स्वर्णिम पृष्ठों में से है, जो यह सिद्ध करते हैं कि राष्ट्रभक्ति उम्र की मोहताज नहीं होती। मात्र 19 वर्ष की आयु में उन्होंने जो सांगठनिक क्षमता, अंतरराष्ट्रीय प्रतिरोधी नेटवर्क और वैचारिक परिपक्वता दिखाई, वह समकालीन विश्व इतिहास में विरले है। यह भारतीय इतिहास की विडंबना रही कि इस महान राष्ट्रनायक को इतिहास की मुख्यधारा की पुस्तकों में वह स्थान नहीं मिल सका जिसके वे हकदार थे। सराभा आज के समाज और युवा पीढ़ी के लिए एक मार्गदर्शक हैं, जो आरामपसंद राजनीति और सतही राष्ट्रवाद के दौर में वास्तविक आत्मोत्सर्ग और वैचारिक प्रतिबद्धता की मांग करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. प्रेस सूचना ब्यूरो, शहीद करतार सिंह सराभा, भारत सरकार, विशेष सेवा एवं फीचर, स्वतंत्रता के नायकों का संघर्ष– 7, वर्ष 2016.
2. माहौर, डॉ. भगवानदास, काकोरी शहीद स्मृति, काकोरी शहीद अर्धशताब्दी समारोह समिति, लखनऊ, 1977.
3. 'सरल' श्रीकृष्ण, क्रांतिकारी कोश (तृतीय खंड), प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2012.
4. व्यास, लल्लन प्रसाद, भारत के महान क्रांतिकारी, गंगा–पुस्तकमाला–कार्यालय, लखनऊ, 1966.
5. चंद्र विपिन, आधुनिक भारत का इतिहास, प्रकाशक ओरिएंट ब्लैकस्वॉन, नई दिल्ली वर्ष 2016.
6. सरकार सुमित, आधुनिक भारत (1885 –1947), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2005.
7. शुक्ल, आर.एल., आधुनिक भारत का इतिहास (स्वतंत्रता–प्राप्ति और देश–विभाजन तक) हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, वर्ष 2006.
8. चन्द्र बिपिन, मुखर्जी मृदुला, मुखर्जी आदित्य, क. न. पनिकर, महाजन सुचेता, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली वर्ष 2005.
9. दुबे, सत्यनारायण, इतिहास, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी, इंदौर।
10. निगम, नंदकिशोर, बलिदान (चंद्रशेखर आजाद की रोमांचकारी जीवनी), नया हिंदुस्तान प्रेस, चांदनी चौक, दिल्ली।
11. खुल्लर, के. के., आजादी की मशालें, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
12. सान्याल, जितेंद्रनाथ, अमर शहीद सरदार भगत सिंह।
13. सिंह, गुरमीत, गदर पार्टी के गठन से प्रथम लाहौर षड्यंत्र केस तक: करतार सिंह सराभा के विशेष संदर्भ में एक ऐतिहासिक अध्ययन, शोध प्रबंध,अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा मध्य प्रदेश वर्ष 2022.

****